UPSSSC–PET

प्रारंभिक पात्रता परीक्षा (PET)

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग (UPSSSC)

भाग - 1

भारत का सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	सिन्धु घाटी सभ्यता	1
2	वैदिक युग	5
3	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	9
4	मौर्य साम्राज्य	13
5	गुप्त काल और गुप्तोतर काल	16
6	प्रारंभिक मध्यकालीन भारत	20
7	अरब आक्रमण एवं दिल्ली सल्तनत	22
8	मुग़ल साम्राज्य	27
9	मराठा साम्राज्य	33
10	भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	35
11	18वीं शताब्दी का भारत और भारत में ब्रिटिश विस्तार	36
12	ब्रिटिश प्रशासन (1757–1857)	39
13	1857 का विद्रोह एवं उसके परिणाम	41
14	ब्रिटिश भारत के विरुद्ध जन आंदोलन	44
15	सामाजिक–धार्मिक आंदोलन	46
16	राष्ट्रवाद का उदय और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	50
17	राष्ट्रीय आंदोलन (1905–1919)	53
18	गांधी युग और राष्ट्रीय आंदोलन (1919–1940)	56
19	स्वतंत्रता की ओर (1940 – 1947)	63
20	क्रांतिकारी गतिविधियाँ	66
21	गवर्नर जनरल और वायसराय	69
22	भारत सरकार अधिनियम, 1935	71
23	भारत की भौगोलिक स्थिति	75

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	भारत की संरचना और भू–आकृति	79
25	अपवाह तंत्र	92
26	जलवायु एवं भारतीय मानसून	101
27	मृदा	106
28	प्राकृतिक वनस्पति	110
29	भारत में खनिज	113
30	जनगणना	115
31	फसलें	118
32	भारत में उद्योग	121
33	भारत में परिवहन	125
34	विश्व का भूगोल	130
35	अर्थव्यवस्था का परिचय	150
36	भारत में आर्थिक नियोजन	152
37	कृषि क्षेत्र	155
38	उद्योग और सेवा क्षेत्र	159
39	मुद्रा और मुद्रास्फीति	164
40	भारत में बैंकिंग और मौद्रिक नीति	169
41	आर्थिक सुधार	174
42	कराधान	179
43	राजकोषीय नीति	182
44	वित्तीय बाज़ार	183
45	विदेशी व्यापार, भुगतान संतुलन और विदेशी निवेश	187
46	बजट	190

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
47	भारतीय संविधान का निर्माण	193
48	भारतीय संविधान की विशेषताएँ	197
49	प्रस्तावना	202
50	नीति निदेशक सिद्धांत	204
51	मूल अधिकार	206
52	मौलिक कर्तव्य	211
53	संसद	212
54	राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	219
55	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद	225
56	राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेश	227
57	न्यायपालिका	230
58	राज्य विधानमंडल	238
59	स्थानीय स्वशासन	244
60	केंद्र–राज्य संबंध	251
61	खेल	262
62	महत्वपूर्ण दिवस	275
63	राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार	279
64	विभिन्न देशों की राजधानी एवं मुद्रा	285
65	पुस्तकें एवं लेखक	287
66	भारत एवं इसके पड़ोसी देश	292
67	महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संगठन	294
68	भारतीय कला और संस्कृति	300

1 CHAPTER सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण-पश्चिम एशिया के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक कांस्य युग की सभ्यता थी।
- मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की तीन सबसे प्राचीन और व्यापक प्राचीन सभ्यताओं में से एक थी।
- हड़प्पा: खोज - सर्वप्रथम 1921 में पंजाब (पाकिस्तान) के हड़प्पा स्थान पर दयाराम साहनी द्वारा।
- ✓ हालाँकि 1872-73 में सर अलेक्जेंडर कनिंघम (ASI के महानिदेशक) द्वारा इसका प्रारंभिक अन्वेषण किया गया।
- **दक्षिण एशिया की पहली नगरीय संस्कृति;** उन्नत नगर नियोजन, वास्तुकला और सामाजिक संगठन के लिए जानी जाती है।
- **सभ्यता का विस्तार:** महाराष्ट्र में दैमाबाद (सबसे दक्षिण), उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (सबसे पूर्व), पाकिस्तान में सुत्कांगेडोर (सबसे पश्चिम) और जम्मू में मांडा (सबसे उत्तर)।

<u>सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल:</u>

स्थल, स्थान एवं नदी	**मुख्य विशेषताएँ**
हड़प्पा, पंजाब (पाकिस्तान), रावी नदी	➢ उत्खननकर्ता: जॉन ह्यूबर्ट मार्शल के अधीन दयाराम साहनी (1921)। ➢ यह सिंधु घाटी सभ्यता का खोजा गया पहला स्थल है जहाँ से पत्थर की पुरुष नृत्य मूर्ति (नटराज), दो कतारों में छह अनाज भंडार, लाल बलुआ पत्थर की पुरुष मूर्ति, पत्थर के लिंग और योनियाँ, मातृदेवी की मूर्तियाँ, पासे और समाधि संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए।
मोहनजोदड़ो, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	➢ उत्खननकर्ता: जॉन ह्यूबर्ट मार्शल के अधीन आर. डी. बनर्जी (1922) ➢ यहाँ से विशाल अन्नागार और विशाल स्नानागार (ईंटों से बने) के साथ पशुपति मुद्रा, पक्के स्नानागार, नृत्य करती युवती की कांस्य प्रतिमा (10.5 सेमी, त्रिभंग मुद्रा), पुरोहित राजा की मूर्ति (स्टियटाइट पत्थर), योजनाबद्ध दुर्ग और निम्न नगर, लगभग 700 कुएँ तथा दाह संस्कार के बाद दफ़नाने के प्रमाण आदि भी प्राप्त हुए।
चन्हूदड़ो, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	➢ उत्खननकर्ता: एम. जी. मजुमदार (1931)। ➢ यह स्थल सिंधु सभ्यता का प्रमुख हस्तशिल्प केंद्र था — यहाँ से मनके बनाने, सीप काटने, मुद्राएँ और बाट (भार मापन) बनाने के प्रमाण मिले। साथ ही कुत्ते के पंजे के निशान, मिट्टी की बैलगाड़ी और कांस्य की खिलौना गाड़ी भी मिली।
लोथल, गुजरात, भोगवा–साबरमती संगम	➢ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1954–63)। ➢ यह सिंधु सभ्यता का प्रमुख बंदरगाह नगर था — यहाँ गोदी (dockyard), धान की भूसी के अवशेष (धान की खेती का प्रमाण), मेसोपोटामिया से व्यापार, दोहरा शवाधान, मनके बनाने के कारखाने, हाथी-दाँत की स्केल, नाव , अग्नि-वेदी और कार्नेलियन पत्थर आदि मिले।
सुरकोटड़ा, गुजरात, शादी कौर नदी	➢ उत्खननकर्ता: जे. पी. जोशी (1964)। ➢ यहाँ अंडाकार एवं बर्तनयुक्त-कब्रें और घोड़े की अस्थियों के प्रमाण मिले।

कालीबंगा, राजस्थान, दृशद्वती (घग्गर/सरस्वती नदी)	➢ उत्खननकर्ता: अमलानंद घोष (1953); बी. बी. लाल (1960 के दशक)। ➢ यहाँ चूड़ी कारखाना, जोते हुए खेत का साक्ष्य, ऊँट की अस्थियाँ, अग्नि-वेदी, गेहूँ और जौ के लिए क्रॉस-फरो (आड़े-टेढ़े खेत), पकी हुई ईंटों की नालियाँ और ताँबे की वस्तुएँ मिली।
बनावली, हरियाणा, रंगोई	➢ उत्खननकर्ता: आर. एस. बिष्ट (1974–77)। ➢ यह पूर्व-हड़प्पा और उत्तर-हड़प्पा, दोनों चरणों का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ जौ के दाने, लाजवर्द (लैपिस लाजुली), अग्नि-वेदी, वृत्ताकार सड़कें और मिट्टी के हल मिले।
धोलावीरा, गुजरात (कच्छ), मानहर एवं मंसर (लूणी बेसिन)	➢ उत्खननकर्ता: जे. पी. जोशी (1967); आर. एस. बिष्ट (1990–2005)। ➢ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (2021)। ➢ यहाँ पत्थर के जलाशय, अभिलेखित सूचनापट्ट, प्रथम ज्ञात खगोलीय वेधशाला और तीन भागों (दुर्ग, मध्य नगर तथा निम्न नगर) वाला नगर विन्यास पाया गया।
रोपड़ (रूपनगर), पंजाब, सतलुज नदी	➢ उत्खननकर्ता: वाई. डी. शर्मा (1953)। ➢ यह स्वतंत्रता के बाद पहला उत्खनित सिंधु सभ्यता स्थल था। यहाँ कुत्ते और मनुष्य का संयुक्त शवाधान तथा ताँबे की कुल्हाड़ी मिली।
सुत्कांगेडोर, बलूचिस्तान (पाकिस्तान), दश्त नदी	➢ उत्खननकर्ता: ऑरेल स्टीन (1927)। ➢ यहाँ राख से भरा पात्र, ताँबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी के बर्तन मिले और यह मेसोपोटामिया के साथ व्यापार हेतु बंदरगाह के रूप में कार्य करता था।
राखीगढ़ी, हरियाणा	➢ उत्खननकर्ता: अमरेन्द्र नाथ (1997); दक्कन कॉलेज (2011–16)। ➢ यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है — यहाँ प्रारंभिक, परिपक्व और उत्तर हड़प्पा तीनों चरणों के प्रमाण मिले है तथा योजनाबद्ध आवास, कालीबंगा जैसे मिट्टी के बर्तन और बच्चों के 'पिट्ठू' (हॉपस्कॉच) खेल के चिन्ह मिले।
रंगपुर, गुजरात, मदार नदी	➢ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1931; 1953–54)। ➢ यहाँ हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पा-कालीन अवशेष, पीले-धूसर रंग के बर्तन और धान की खेती के साक्ष्य मिले।
आलमगीरपुर, उत्तर प्रदेश, हिंडन (यमुना की सहायक) नदी	➢ उत्खननकर्ता: वाई. डी. शर्मा (1958)। ➢ उत्तर-हड़प्पा काल का स्थल जहाँ ताँबे की धारदार ब्लेड और एक पात्र पर कपड़े की छाप मिली।
कोटदीजी, सिंध (पाकिस्तान)	➢ उत्खननकर्ता: एफ. ए. खान (1955)। ➢ पूर्व-हड़प्पा स्थल — यहाँ किलेबंदी, सींग वाले देवता की आकृतियों के साथ लाल एवं हल्के पीले बर्तन मिले है।
आमरी, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	➢ उत्खननकर्ता: एन. जी. मजुमदार (1929)। ➢ पूर्व-हड़प्पा संक्रमणकालीन संस्कृति का स्थल — यहाँ से `गैंडे के अवशेष मिले।
दैमाबाद, महाराष्ट्र, प्रवरा (गोदावरी की सहायक) नदी	➢ उत्खननकर्ता: बी. पी. बोपार्डिकर (1958); एस. आर. राव (1974–75)। ➢ यहाँ कांस्य निर्मित रथ, बैल, हाथी और गैंडे की प्रतिमाएँ मिली।
इनामगाँव, महाराष्ट्र (पुणे जिला), घोड़ नदी (भीमा की सहायक)	➢ उत्खननकर्ता: एच. डी. सांकलिया (1968–82, दक्कन कॉलेज)। ➢ ताम्रपाषाणकालीन स्थल — यहाँ से गेहूँ, जौ, मसूर की खेती, सिंचाई नहर, मिट्टी के घर, उत्तरमुखी शवदाह और बच्चों को घर के भीतर दफ़नाने के प्रमाण मिले है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

नागेश्वर, गुजरात (जामनगर के पास, सौराष्ट्र तट), अरब सागर तट	➢ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1955)। ➢ यह सीप-कार्य का केंद्र और तटीय बस्ती थी — यहाँ से मनके, चूड़ियाँ, आभूषण और मेसोपोटामिया से व्यापार के प्रमाण मिले।
शोर्तुगई, अफगानिस्तान, ऑक्सस (अमू दरिया)	➢ उत्खननकर्ता: फ्रेंच पुरातत्व मिशन (1970 का दशक, हेनरी-पॉल फ्रेंकफर्ट)। ➢ सिंधु सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल — यहाँ लाजवर्द व्यापार (बदख्शां की खान से), कार्नेलियन और फ़िरोज़ा मनके तथा भंडारण पात्र मिले।
भिर्राणा, फतेहाबाद जिला, हरियाणा, सरस्वती	➢ उत्खननकर्ता: आर. एस. बिष्ट (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, 2003–04)। ➢ यह सबसे प्राचीन सिंधु सभ्यता स्थल (~7570–6200 ई.पू.) है — यहाँ से पूर्व-हड़प्पा कालीन कृषि और मिट्टी के बर्तनों के प्रमाण मिले।

<u>सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ:</u>

1. नगर नियोजन और अवसंरचना

- ✓ नगर आयताकार ग्रिड योजना के अनुसार बनाए गए थे, जिनमें सड़कें समकोण पर एक-दूसरे को काटती थी ।
- ✓ निर्माण कार्य में पकी हुई मिट्टी की ईंटों का उपयोग किया गया था, जिन्हें जिप्सम गारे से जोड़ा जाता था।
- ✓ निकासी प्रणाली भूमिगत थी, जो घरों को मुख्य सड़कों की नालियों से जोड़ती थी, जिससे उचित स्वच्छता बनी रहती थी।
- ✓ दुर्ग पश्चिमी भाग में मिट्टी की ईंटों के ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया था और इसे निचले नगर से अलग रखा गया था।
- ✓ सड़कें चारों मुख्य दिशाओं में फैली थी जो सुव्यवस्थित नगर योजना को दर्शाती हैं।
- ✓ कालीबंगा में स्थित घरों में दीवार से घिरे कमरे होते थे, जिनमें बाहरी प्रवेशद्वार भी होता था और कभी-कभी उन्हें राहगीरों द्वारा उपयोग किया जाता था।
- ✓ अनाज भंडारण के लिए ईंटों के गोलाकार चबूतरे पर विशाल अन्नागार बनाए जाते थे।

2. कृषि

- ✓ मुख्य फसलें थी: गेहूँ (मुख्य आहार), चावल, बाजरा, जौ, मसूर, चना और तिल।
- ✓ मेहरगढ़ में लगभग 7000 वर्ष पूर्व कपास की खेती की जाती थी, जिससे यह विश्व की सबसे प्रारंभिक कपास उत्पादक सभ्यताओं में से एक बन जाती है।
- ✓ खेतों की जुताई के लिए लकड़ी के हल का उपयोग किया जाता था।
- ✓ पालतू पशुओं में बैल, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर, कुत्ता, बिल्ली, गधा, कूबड़ वाले बैल और ऊँट शामिल थे जिन्हें कृषि कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता था।

3. धार्मिक आस्थाएँ:

- ✓ लिंग, योनि और मातृदेवी की मूर्तियाँ धार्मिक प्रथाओं का संकेत देती हैं।
- ✓ कोई मंदिर नहीं मिला है, जिससे प्रतीत होता है कि पूजा प्रतिमाओं और मूर्तियों के माध्यम से की जाती थी।
- ✓ शावाधान प्रथाओं में लकड़ी के ताबूत (हड़प्पा), दोहरी कब्रें (लोथल), ईंटों के कक्ष (कालीबंगा) और बर्तनयुक्त-कब्रें (सुरकोटाड़ा) शामिल थी।
- ✓ कब्रों में मिट्टी के बर्तन, आभूषण, मनके और ताँबे के दर्पण आदि जैसी वस्तुएँ रखी जाती थी जो मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास का संकेत देती हैं।

4. व्यापार और वाणिज्य

- ✓ हड़प्पावासियों ने मेसोपोटामिया (प्राचीन फारस/ईरान) जैसे क्षेत्रों के साथ व्यापार किया।
- ✓ व्यापार **वस्तु-विनिमय प्रणाली** पर आधारित था क्योंकि धातु मुद्रा का उपयोग नहीं होता था।
- ✓ निर्यात की वस्तुएँ ताँबा, सोना, कपास के वस्त्र, मनके और लाजवर्द थी जबकि आयात की वस्तुएँ सोना और टिन (अफगानिस्तान), जेड पत्थर (मध्य एशिया/चीन), ताँबा (ओमान/अफगानिस्तान) और फ़िरोज़ा (ईरान) आदि थी।
- ✓ नोट: हड़प्पावासी **लोहे** से परिचित नहीं थे।

Unleash the topper in you

5. **कला एवं शिल्प:**
   - ✓ कांस्य ढलाई के लिए विलुप्त मोम तकनीक का उपयोग किया जाता था।
   - ✓ पत्थर की मूर्तियों में दाढ़ी वाला पुरुष (स्टीटाइट, मोहनजोदड़ो) और पुरुष धड़ (लाल बलुआ पत्थर, हड़प्पा) शामिल हैं।
6. **मुहरें**
   - ✓ मुहरें स्टियटाइट पत्थर/सेलखड़ी की बनी होती थी; प्रायः वर्गाकार (2×2 सेमी); मुख्यतः व्यापारिक उपयोग।
   - ✓ इन पर लगभग 26 चिह्नों वाली लिपि अंकित थी; सबसे लंबी हड़प्पा मुहर मिली है।
   - ✓ मुहरों पर **एक-सींग वाले गैंडे** और **कूबड़ वाले बैल** का चित्रांकन सबसे सामान्य था।
   - ✓ **पशुपति मुहर** पर भैंसे के सींग वाला मुकुट पहने तथा पद्मासन में बैठे एक त्रि-मुखी देवता को दर्शाया गया है जिसके चारों ओर हाथी, बाघ, भैंस, गैंडा और दो हिरण है; यह धार्मिक प्रतीक के रूप में मानी जाती है।
   - ✓ मेसोपोटामिया की मुहरें बेलनाकार थी, जिन पर मिट्टी से सतत आकृतियाँ बनी हुई थी।
7. **लिपि**
   - ✓ हड़प्पा लिपि भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन ज्ञात लिपि मानी जाती है किन्तु इसे अभी तक पढ़ा नहीं गया है।
   - ✓ यह चित्रात्मक लिपि थी जिसमें लगभग 250–400 प्रतीक थे।
   - ✓ यह **दाएँ से बाएँ** लिखी जाती थी।

सिंधु सभ्यता के पतन का कारण और संबंधित विद्वान

पतन का कारण	विद्वान
जलवायु परिवर्तन	ऑरेल स्टीन, ए. एन. घोष
भूवैज्ञानिक परिवर्तन	एम. आर. साहनी
प्राकृतिक आपदा	के. यू. आर. केनेडी
बाढ़	मैकी और मार्शल
आर्य आक्रमण	गॉर्डन चाइल्ड और व्हीलर
पारिस्थितिक असंतुलन	फेयरसर्विस

Toppersnotes Unleash the topper in you

2 CHAPTER वैदिक युग

- वैदिक सभ्यता सिंधु सभ्यता के बाद अस्तित्व में आई और इसे ऋग्वैदिक/प्रारंभिक वैदिक काल (1500–1000 ईसा पूर्व) तथा उत्तरवैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।

वेद

- वेद शब्द 'विद्' (जानना) धातु से बना है जिसका अर्थ है 'ज्ञान'। वेद चार है: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेदत्रयी शब्द ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को संदर्भित करता है।

1. **ऋग्वेद**
   - ✓ ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद है और इसे "मानवता का प्रथम विधान" कहा गया है। इसमें ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वर्णन है, भरत नामक कुल (जिससे बाद में भारत/इंडिया बना) का उल्लेख है और इसमें 1,028 सूक्त (10,580 ऋचाएँ) हैं, जिनमें 11 बालखिल्य सूक्त भी जोड़े गए हैं।
   - ✓ इसमें पहली बार "स्तूप" का उल्लेख मिलता है (प्रारंभिक ब्राह्मी लिपि में) तथा "निष्क" का भी उल्लेख मिलता है जो पहले गले का आभूषण था और बाद में सोने का सिक्का बन गया। इसमें विभिन्न धातुओं (अयस) का भी उल्लेख है।
   - ✓ ऋग्वेद से संबंधित पुरोहित को " होतृ" कहा जाता है।
2. **सामवेद**
   - ✓ सामवेद में कुल 1,810 मंत्र हैं, जिनमें अधिकांश ऋग्वेद से लिए गए हैं। इन्हें संगीतात्मक रूप में व्यवस्थित किया गया है, जिससे यह ऋग्वैदिक ऋचाओं का संगीतमय संस्करण बन जाता है। यह राग, रागिनी और ध्रुपद का आधार है।
   - ✓ इसे पूर्वार्चिक (6 उपविभाजन/आपाठक) और उत्तरार्चिक (9 उपविभाजन/प्रपाठक) में विभाजित किया गया है। सामवेद से संबंधित पुरोहित को "उद्गाता" कहा जाता है।
3. **यजुर्वेद**
   - ✓ यजुर्वेद को **"कर्मकांड वेद"** या यज्ञ प्रार्थनाओं का ग्रंथ कहा जाता है। यह वेद मुख्यतः अनुष्ठानों और यज्ञों पर केंद्रित है, इसमें लगभग 2,000 मंत्रों के साथ कुल 40 अध्याय हैं।
   - ✓ **दो प्रमुख ग्रंथ:**
     - कृष्ण यजुर्वेद: यह मंत्र (सूक्त) एवं पद्य का मिश्रण है।
     - शुक्ल (श्वेत) यजुर्वेद: इसमें गद्य रूप में भाष्य होता है।
   - ✓ इसका अंतिम अध्याय ईशोपनिषद है, जिसमें दार्शनिक और आध्यात्मिक विषयों की चर्चा की गई है, जबकि अन्य भागों में यज्ञों के नियम और विधियों का वर्णन है। इससे संबंधित पुरोहित "अध्वर्यु" कहलाता है और इसका उपवेद "धनुर्वेद" (धनुर्विद्या) है।
4. **अथर्ववेद**
   - ✓ अथर्ववेद चारों वेदों में सबसे अंतिम है और इसे "ब्रह्मवेद" या "अथर्वांगिरस वेद" भी कहा जाता है। इसमें कुल 731 सूक्त (~5,987 मंत्र) हैं, जिनमें लगभग 1,200 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। इसमें ताबीज, जादुई प्रयोग और तंत्र-मंत्र संबंधी विधियाँ शामिल हैं जो जनसामान्य की आस्थाओं और बुरी शक्तियों से निपटने के उपायों को दर्शाते हैं।
   - ✓ यह 20 खण्डों (काण्ड) में विभाजित है और इसकी दो प्रमुख शाखाएँ हैं—शौनक और पैप्पलाद। प्रारंभ में यह वेदत्रयी (तीन मूल वेदों) का हिस्सा नहीं था।
   - ✓ इसमें "सभा" और "समिति" (जनसभा और परिषद) का भी उल्लेख मिलता है। इससे संबंधित पुरोहित को 'ब्रह्मा' कहा जाता है।

ब्राह्मण ग्रंथ

- ब्राह्मण ग्रंथ सरल गद्य में रचित होते हैं और इनका मुख्य केंद्र बिंदु यज्ञ होता है (ब्रह्मा = यज्ञ)। प्रत्येक वेद के साथ उसके अपने-अपने ब्राह्मण ग्रंथ जुड़े होते हैं।

वेद	ब्राह्मण ग्रंथ / विवरण	पुरोहित / टिप्पणी
ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण (राज्याभिषेक विधि का वर्णन करता है), कौषीतकि ब्राह्मण	होतृ पुरोहितों द्वारा रचित
यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण → कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित शतपथ ब्राह्मण → शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित (शतपथ ब्राह्मण अध्वर्यु पुरोहित याज्ञवल्क्य द्वारा रचित है)	—
सामवेद	तांड्य महाब्राह्मण, छांदोग्य (खादिर/खांडोग्य) ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण	उद्गातृ पुरोहितों द्वारा रचित
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण	—

आरण्यक

➢ ये ब्राह्मण ग्रंथों का अंतिम भाग है; इनमें यज्ञ एवं योग सहित दार्शनिक तथा रहस्यात्मक विषयों की चर्चा है; इनका पठन वनों में किये जाने के कारण इन्हें "आरण्यक" कहा गया। कुल 7 आरण्यक उपलब्ध हैं: ऐतरेय, सांख्ययन, तैत्तिरीय, मैत्रायणी, मध्यंदिन, तलवाकार, जैमिनीय।

उपनिषद

➢ "उपनिषद" शब्द "उप + नि + सद्" से बना है जिसका अर्थ है— "गुरु के समीप बैठकर गुप्त ज्ञान प्राप्त करना"। कुल 108 उपनिषद (13 मुख्य) हैं जो वैदिक विचारों की आध्यात्मिक और तात्त्विक व्याख्या करने वाले दार्शनिक ग्रंथ है तथा ये बलि जैसे कर्मकांड की बजाय ज्ञान, ध्यान और त्याग पर बल देते है।

मुख्य उपनिषद:

➢ **बृहदारण्यक उपनिषद** → सबसे प्राचीन → इसमें याज्ञवल्क्य और गार्गी वाचकनवी के बीच दार्शनिक संवाद है।

➢ **मुण्डकोपनिषद** → सबसे विस्तृत; इसमें "सत्यमेव जयते" वाक्य का उल्लेख मिलता है।

➢ **छांदोग्यपनिषद** → इसमें पहले तीन आश्रमों की चर्चा होती है और ऋषि सत्यकाम जबाल की कथा वर्णित है।

➢ **कठोपनिषद** → यह नचिकेता और यम के बीच संवाद पर आधारित है।

वेदांग (वेदों के छह अंग) - उत्तर वैदिक काल

1. **शिक्षा** → मंत्रों का उच्चारण → मुख्य बल : सही उच्चारण पर।
2. **कल्प** → अनुष्ठान, कर्तव्य, संस्कार → मुख्य बल: बलिदान और समारोहों की प्रक्रिया।
3. **व्याकरण** → व्याकरण, भाषा विज्ञान → मुख्य बल: भाषा के नियम।
4. **निरुक्त** → व्युत्पत्ति → मुख्य बल: शब्दों की उत्पत्ति और अर्थ (प्रसिद्ध: यस्का का निरुक्त)।
5. **छंद** → मात्राएँ / काव्य संरचना → मुख्य बल: छंद, लय (पिंगल का छंदसूत्र)।
6. **ज्योतिष** → खगोल विज्ञान और कैलेंडर → मुख्य बल: अनुष्ठानों के लिए सूर्य, चंद्रमा, ग्रहों की गणना (ज्योतिष वेदांग - 400 छंद)

18 पुराण: ब्रह्मा, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्म-वैवर्त्य, लिंग, वराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्माण्ड।

प्रारंभिक/पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ईसा पूर्व)

➢ इंडो-यूरोपीय भाषा बोलने वाले आर्य लोग अर्ध-घुमंतू पशुपालक थे जो प्रारंभिक संस्कृत बोलते थे (ये अवेस्ता, यूनानी और लैटिन से संबंधित थी)।

➢ इन्होंने लगभग 1500 ईसा पूर्व में खैबर दर्रे के माध्यम से कई चरणों में भारत में प्रवेश किया (कुछ ईरान के रास्ते, जैसा कि जेंद अवेस्ता में उल्लेख है)। 'आर्य' शब्द 'अर' (विदेशी/अजनबी) से व्युत्पन्न है। पहला ऐतिहासिक उल्लेख भगारकाई शांति संधि (1350 ई.पू.) में मिलता है जिसमें आर्य देवताओं वरुण, इंद्र, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।

➢ आर्य सबसे पहले पंजाब क्षेत्र में बसे और बाद में पूर्व की ओर गंगा के मैदान तक फैल गए। अफगानिस्तान से पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक का क्षेत्र सप्तसैंधव (सात नदियों की भूमि) कहलाता था, जिसमें सिंधु (इंडस), वितस्ता (झेलम), अस्किनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (ब्यास), शुतुद्रि (सतलज) और सरस्वती (घग्गर–हकरा) नदियाँ शामिल थी।

- आर्य समाज की मूल इकाई ‘कुल’ (परिवार) थी। कई परिवार मिलकर ग्राम (गाँव) बनाते थे, जिसका मुखिया ‘ग्रामणी’ होता था। गाँव मिलकर विष (कुल या जिला) और कई विष मिलकर जन (जनजाति) बनाते थे, जिसका नेतृत्व राजन (मुखिया/राजा) करता था जो वंशानुगत होता था परंतु पूर्णतया नहीं क्योंकि यह सभा (बुजुर्गों की परिषद), समिति (सामान्य सभा) और विदथ (जनसभा) से परामर्श लेकर शासन करता था। सेनानी (सैन्य प्रमुख) सेना का नेतृत्व करता था, जनजाति की रक्षा करता था, बलि (उपहार/कर) प्राप्त करता था और पुजारी वर्ग का शक्तिशाली प्रभाव था जो राजा की शक्ति पर नियंत्रण रखते थे।
- आर्य पशुपालक थे जो संयुक्त परिवार में रहते थे, जिसका मुखिया गृहपति (पिता) होता था। महिलाओं को सम्मान प्राप्त था; वे नृत्य, कुश्ती और मुक्केबाजी में भाग लेती थी, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने, मनपसंद का विवाह और पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता थी। अपाला, घोषा, विश्ववारा और लोपामुद्रा जैसी प्रसिद्ध विदुषी महिलाएँ इसी काल से संबंधित थी।

विवाह के प्रकार

विवाह का प्रकार	मुख्य विशेषता	सामाजिक स्वीकृति
ब्रह्म विवाह	कन्या को अच्छे चरित्र वाले विद्वान पुरुष को दान में देना; दहेज़ का चलन नहीं	सर्वाधिक स्वीकृत (आदर्श)
दैव विवाह	कन्या का विवाह यज्ञ के पुरोहित से दक्षिणा के रूप में किया जाता था	स्वीकृत
आर्ष विवाह	प्रतीकात्मक रूप से वर को एक गाय और एक बैल दिया जाता था (वधू मूल्य के रूप में)	स्वीकृत
प्रजापत्य विवाह	कर्तव्य और साहचर्य के आशीर्वाद के साथ विवाह	स्वीकृत
आसुर विवाह	धन या दहेज देकर वधू को खरीदा जाता था	अस्वीकृत
गंधर्व विवाह	आपसी प्रेम और सहमति से हुआ विवाह	अस्वीकृत किन्तु कम कठोरता
राक्षस विवाह	बलपूर्वक या अपहरण द्वारा विवाह (युद्धकाल में प्रचलित)	अस्वीकृत, किंतु क्षत्रियों के लिए अनुमेय
पैशाच विवाह	सोती हुई, नशे में या असहाय कन्या के साथ बलपूर्वक संबंध बनाकर विवाह करना	अत्यंत निंदनीय

आर्थिक जीवन

- आर्यों की अर्थव्यवस्था शुरू में पशुपालन पर आधारित थी जिसमें मवेशी ही धन का माप होते थे; बाद में गाँव बसने के साथ कृषि मुख्य व्यवसाय बन गया; मवेशी प्रजनन समृद्धि का संकेत देता था (धनवान व्यक्ति = गोमत) और ऋग्वेद के गव्युति और गोधूलि जैसे शब्द आर्थिक संदर्भों को दर्शाते हैं।

धर्म

- **मुख्य देवता:** इंद्र (पुरंदर, वृत्रहन; वर्षा, वज्र, युद्ध; लगभग 250 सूक्त), अग्नि (अग्नि, मध्यस्थ; लगभग 200 सूक्त), वरुण (ब्रह्मांडीय व्यवस्था/ऋत, जल, नैतिकता), सोम (देवीकृत पेय), रुद्र (तूफान, आरोग्यदाता), यम (मृत्यु), पूषन, विष्णु, मरुत।
- **देवियाँ:** अदिति (अनंत काल), उषा (भोर), सावित्री/गायत्री, सिनीवाली (उर्वरता), आख्यानी (वन)।
- नदियों में, वैदिक ग्रंथों में सबसे अधिक उल्लेख सरस्वती और सिंधु का है, जबकि गंगा को जाह्नवी और यमुना को अंशुमती कहा जाता था।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ईसा पूर्व)

- ऋग्वैदिकोत्तर स्रोत समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति और धर्म में परिवर्तन दर्शाते है। आर्य 1500-800 ईसा पूर्व और 500 ईसा पूर्व तक गंगा और यमुना के मैदानों में फैल गए, जो शुरू में पंजाब में थे।

राजनीतिक व्यवस्था

- प्रारंभिक जनजातीय बस्तियाँ वंशानुगत राजशाहियों और गणराज्यों के उदय के साथ शक्तिशाली राज्यों में परिवर्तित हो गईं। राजस्व संग्रह और श्रम-नियोजन ने राज्य के विस्तार को समर्थन दिया। सभाओं का महत्व धीरे-धीरे कम होने लगा और राजा (सम्राट) अधिक शक्तिशाली हो गया। उसने नियमित सेना बनाए रखी जिसमें राजन्य (क्षत्रिय) योद्धा के रूप में कार्य करते थे। प्रमुख विधि-निर्माताओं में मनु (मनुस्मृति), नारद और बृहस्पति शामिल थे।।

सामाजिक व्यवस्था

- अयोध्या, इंद्रप्रस्थ और मथुरा जैसे नगरों का विकास हुआ। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई तथा उन्हें सभा से बाहर रखा गया, उत्तराधिकार और संपत्ति के अधिकार से वंचित किया गया तथा ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार पुत्री को बोझ माना गया।
- शूद्रों और स्त्रियों को वैदिक शिक्षा, गायत्री मंत्र और उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था।
- ब्राह्मण समाज में एक सम्मानित पुजारी वर्ग के रूप में प्रतिष्ठित हुए।
- गोत्र प्रणाली ने वंश परंपरा पर बल दिया।
- चांडाल (अस्पृश्य) वर्ण व्यवस्था से बाहर माने जाते थे।
- प्रचलित धातुओं में सोना, तांबा/लोहा, टिन, सीसा और चांदी शामिल थी।

आर्थिक व्यवस्था

- प्रमुख व्यवसायों में कृषि, पशुपालन, व्यापार और उद्योग शामिल थे।
- लगभग 1200 ईसा पूर्व तक कृष्ण अयस (लोहा) ज्ञात था और 800 ईसा पूर्व तक कुल्हाड़ी व हल जैसे औजारों का व्यापक उपयोग होने लगा।
- भूमि परिवार-आधारित होती थी जिसका संचालन गृहपति (परिवार मुखिया) करता था।
- व्यापारी श्रेणियों (गिल्डों) में संगठित थे जिनका नेतृत्व श्रेष्ठिन् करते थे।
- मूल्य की इकाइयाँ थी — निष्क (स्वर्ण), शतमान (सौ इकाई) और कृष्णल (1 रत्ती)।
- कर अनिवार्य था, मुख्यतः वैश्य वर्ग पर लगाया जाता था। कर-संग्राहक को 'भागदुघ' तथा कोषाध्यक्ष को 'संग्रहीत्री' कहा जाता था।

धर्म

- इस काल को ब्राह्मणीय युग कहा जाता है, जिसमें सरल उपासना पद्धति जटिल यज्ञों में परिवर्तित हो गई।
- वरुण, पृथ्वी, इंद्र, अग्नि जैसे प्रचलित देवताओं का महत्त्व कम होने लगा जबकि प्रजापति (सृष्टिकर्ता), विष्णु और रुद्र जैसे नए देवता प्रमुख होने लगे।
- प्रमुख ग्रंथों में यज्ञों पर केंद्रित संहिताएँ और ब्राह्मण ग्रंथ शामिल थे।
- कर्म, माया, पुनर्जन्म और आत्मा (ब्रह्म) जैसे दार्शनिक सिद्धांतों की अवधारणा प्रस्तुत हुई। इन विचारों का प्रथम दार्शनिक प्रतिपादन उपनिषदों में हुआ।
- प्रमुख सूत्र ग्रंथों में श्रौत सूत्र (सार्वजनिक यज्ञ), गृह्य सूत्र (घरेलू संस्कार), धर्म सूत्र (सामाजिक कर्तव्य एवं नैतिक आचरण), और शुल्व सूत्र (यज्ञ वेदियों का निर्माण व ज्यामिति) शामिल थे।
- अत्यधिक कर्मकांड और पुजारी वर्चस्व से असंतोष के कारण जैन धर्म और बौद्ध धर्म जैसे सुधारवादी धर्मों का उदय हुआ।

वर्ण व्यवस्था

- प्रारंभ में केवल तीन वर्ण थे — ब्राह्मण (पुरोहित), क्षत्रिय (योद्धा) और वैश्य (सामान्य जन)।
- बाद में चौथा वर्ण शूद्र (श्रमिक/सेवक) जोड़ा गया।
- समाज के बाहर रहने वाले चांडालों को पाँचवें वर्ग के रूप में माना गया।
- परिणामस्वरूप चार वर्णों की व्यवस्था स्थापित हुई:
  - ✓ ब्राह्मण – पुरोहित
  - ✓ क्षत्रिय – योद्धा / शासक
  - ✓ वैश्य – व्यापारी / कृषक
  - ✓ शूद्र – सेवक / श्रमिक

Toppers Notes Unleash the topper in you

3 CHAPTER बौद्ध धर्म और जैन धर्म

बौद्ध धर्म

➢ इसकी स्थापना छठी शताब्दी ईसा पूर्व में शक वंश के क्षत्रिय राजकुमार गौतम सिद्धार्थ ने की थी।

गौतम बुद्ध:

➢ बौद्ध धर्म कपिलवस्तु, लुम्बिनी (भारत-नेपाल सीमा के पास) के शाक्य वंश (क्षत्रिय) के सिद्धार्थ गौतम (जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व) की शिक्षाओं और जीवन पर आधारित है। इनके परिवार में शामिल है- शुद्धोधन (पिता), माया/महामाया देवी(माता), महाप्रजापति गौतमी (सौतेली माँ), यशोधरा या भद्दकच्चना/गोपा (पत्नी) और राहुल(पुत्र)।

➢ 29 वर्ष की आयु में, उन्होंने राजसी जीवन त्यागकर तपस्वी जीवन अपनाया और बोधगया में एक पीपल के पेड़ के नीचे 49 दिनों के ध्यान के बाद, 35 वर्ष की आयु में बुद्ध को ज्ञान (बोधि) की प्राप्ति हुई, उस समय उत्तर भारत में 16 महाजनपद मौजूद थे (7वीं-6वीं शताब्दी ईसा पूर्व)।

ज्ञान प्राप्ति के बाद

➢ बुद्ध ने पहला उपदेश सारनाथ में धर्मचक्रप्रवर्तन (धर्म चक्र प्रवर्तन) के रूप में दिया था, जिसे अशोक के सिंह स्तंभ द्वारा स्मरण किया जाता है, जिसमें उनके शिष्य आनंद, सारिपुत्त, महामोग्गल्लायन और महाकच्चायन उपस्थित थे; इसके बाद के अधिकांश उपदेश पाली भाषा में श्रावस्ती में दिए गए, जिसमें अग्नि उपदेश (आदित्तपरीय सुत्त) भी शामिल है; महापरिनिर्वाण 483 ईसा पूर्व में कुशीनगर में हुआ, जिसमें उनके अंतिम शब्द थे: "आत्मदीपो भवः।

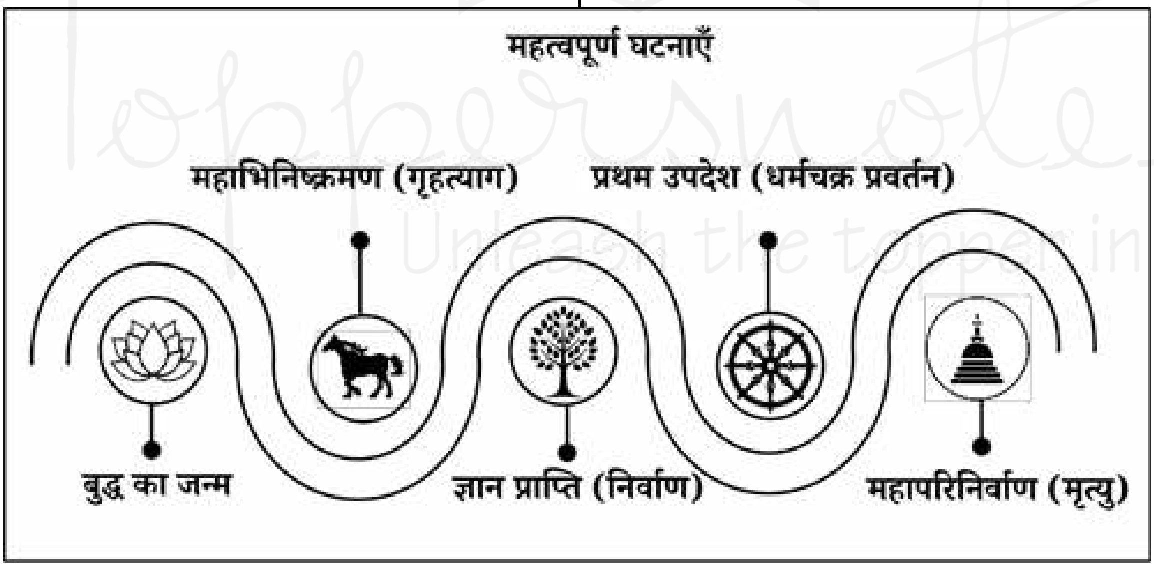

बुद्ध की शिक्षाएँ

➢ मुख्य शिक्षाएँ: चार आर्य सत्य (आर्य-सच्चानि) और अष्टांगिक मार्ग (अट्ठांगिक मग्गा)।

➢ **अष्टांगिक मार्ग (अट्ठांगिक मग्ग)**
- ✓ सम्यक समाधि (सही ध्यान)
- ✓ सम्यक संकल्प (सही विचार या निश्चय)
- ✓ सम्यक स्मृति (सही जागरूकता)
- ✓ सम्यक व्यायाम (सही प्रयास)
- ✓ सम्यक आजीव (सही आजीविका)
- ✓ सम्यक कर्मान्त (सही आचरण)
- ✓ सम्यक वाचा (सही वाणी)

चार आर्य सत्य

1. दुख (दुःख) जीवन में अंतर्निहित है।
2. प्रत्येक दुख का एक कारण (समुदाय) होता है।
3. दुख का अंत (निरोध) किया जा सकता है।
4. अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करके इसका अंत किया जा सकता है।

अन्य सिद्धांत

- अनात्मवाद - कोई स्थायी आत्मा नहीं है।
- त्रि-रत्न - बुद्ध, धम्म, संघ।

बौद्ध संगीतियाँ

संगीति / तिथि व स्थान	राजा व अध्यक्ष	प्रमुख परिणाम
प्रथम (483 ई.पू., राजगृह – सप्तपर्णी गुफा)	राजा: अजातशत्रु अध्यक्ष: महाकश्यप	➢ बुद्ध के उपदेशों का संकलन **त्रिपिटक** के रूप में किया गया — विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक।
द्वितीय (383 ई.पू., वैशाली)	राजा: कालाशोक अध्यक्ष: सबकामीर	➢ संघ के आचरणों पर मतभेद के कारण बौद्ध धर्म दो शाखाओं में विभाजित हुआ — **स्थविरवादि** और **महासांघिक**।
तृतीय (250 ई.पू., पाटलिपुत्र)	राजा: अशोक अध्यक्ष: मोग्गलिपुत्त तिस्स	➢ अभिधम्म पिटक में **कथावत्थु** जोड़ा गया, विदेशों (श्रीलंका आदि) में बौद्ध मिशन भेजे गए, तथा बौद्ध धर्म का अंतरराष्ट्रीय विस्तार हुआ।
चतुर्थ (72 ई., कुंडलवन – कश्मीर)	राजा: कनिष्क अध्यक्ष: वसुमित्र उपाध्यक्ष: अश्वघोष	➢ त्रिपिटक पर टीकाओं का संकलन, **'महाविभाष'** ग्रंथ की रचना और बौद्ध धर्म का विभाजन — **महायान** व **हीनयान** में।

बौद्ध धर्म की विभिन्न शाखाएँ

पहलू	हीनयान	महायान	वज्रयान
अर्थ	लघुयान (छोटा वाहन)	महायान (बड़ा वाहन)	वज्रयान (वज्र वाहन)
प्रसार	श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, दक्षिण-पूर्व एशिया	चीन, जापान, कोरिया, वियतनाम, तिब्बत	बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, तिब्बत (पद्मसंभव के माध्यम से)
लक्ष्य	व्यक्तिगत मोक्ष (स्व-निर्वाण)	सामूहिक मोक्ष (बोधिसत्वों के माध्यम से)	अनुष्ठानों व तांत्रिक साधना के माध्यम से ज्ञान (प्रबोधन)
बुद्ध	ऐतिहासिक मानव, देवता नहीं	बुद्ध देवता के रूप में पूजनीय	बुद्ध देवतुल्य; तांत्रिक देवता केंद्र में
सिद्धांत / अवधारणा	अर्हत / अरहंत पर बल	बोधिसत्व, करुणा और शून्यता पर बल	अनुष्ठान, मन्त्र और तांत्रिक साधनाएँ
संरक्षण / आश्रयदाता	अशोक, शैलेन्द्र वंश (जावा)	चीनी एवं तिब्बती शासक	तिब्बती शासक (विशेषकर 11वीं शताब्दी में)
मुख्य ग्रंथ	पाली त्रिपिटक	मूलमाध्यमिककारिका, सूत्रालंकार, ललितविस्तार	तिब्बती तंत्र, वज्रयान ग्रंथ

हीनयान एवं महायान में प्रमुख प्रतीक

घटना	हीनयान (प्रतीकात्मक रूप)	महायान (रूपात्मक / मूर्त रूप)
जन्म	हाथी और कमल	माया का स्वप्न
संन्यास	घोड़ा	बुद्ध (भिक्षु रूप में) घोड़े के साथ

ज्ञानप्राप्ति	पीपल वृक्ष	भूमि-स्पर्श मुद्रा
प्रथम उपदेश	चक्र (आठ तीलियाँ)	धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा
महापरिनिर्वाण (मृत्यु)	स्तूप	महापरिनिर्वाण मुद्रा (दाहिनी करवट लेटे हुए, सिर हथेली पर टिकाए)

बौद्ध साहित्य

- जातक कथाएँ: बुद्ध के पिछले जन्मों की लगभग 600 कहानियाँ; लगभग 300 ईसा पूर्व संकलित।
  - ✓ ,मातंग जातक: बुद्ध पूर्वजन्म में चांडाल के रूप में।
- **दीघ निकाय** – 34 दीर्घ उपदेश।
- **मज्झिम निकाय** – मध्यम लंबाई के उपदेश।
- **संयुक्त निकाय** – परस्पर संबंधित उपदेश।
- **अंगुत्तर निकाय** – संख्यात्मक रूप में वर्गीकृत उपदेश।
- **अश्वघोष** – बुद्धचरित, सौंदरानंद के रचयिता।
- **बुद्धघोष** – विसुद्धिमग्ग के रचयिता।
- **वसुबंधु** – अभिधर्मकोश के रचयिता।
- **मिलिंद प्रश्न (मिलिंदपन्हो)** – इंडो-ग्रीक राजा मिनांडर (मिलिंद) और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच संवाद।

जैन धर्म

- जैन धर्म की उत्पत्ति ईसा पूर्व 6वीं शताब्दी में ब्राह्मणवाद के विरोध स्वरूप हुई, जिसने एक गैर-ब्राह्मणिक धर्म की स्थापना की। तीर्थंकर या जिन वह मानव होता है जो तपस्या के माध्यम से ज्ञान (सर्वज्ञता) प्राप्त करता है और आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनता है।
- प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे, जो चक्रवर्ती राजा भरत के पिता थे (जिनका उल्लेख श्रीमद्भागवत और ऋग्वेद में मिलता है)। उन्होंने कैलाश पर्वत पर देह त्याग किया और उनका प्रतीक बैल है।
- कुल 24 तीर्थंकर हुए जो सभी क्षत्रिय वर्ग से थे, जिनमें अंतिम वर्धमान महावीर थे जिन्होंने ब्रह्मचर्य को अपने प्रमुख उपदेश के रूप में प्रतिपादित किया।

महावीर (निगंठ/नायपुत्र)

- **जन्म:** वर्धमान के रूप में चैत्र शुक्ल त्रयोदशी, ईसा पूर्व 540 में कुंडग्राम (वैशाली के निकट) में हुआ।
- **परिवार**
  - ✓ पिता: सिद्धार्थ – ज्ञातृक कुल के प्रमुख।
  - ✓ माता: त्रिशला – वैशाली के लिच्छवि राजकुमार चेटक की बहन।
- **विवाह एवं संतान:** यशोदा (पत्नी), प्रियदर्शना (पुत्री), जमाली (दामाद एवं इनके प्रथम शिष्य)।
- **संन्यास:** 30 वर्ष की आयु में उन्होंने गृहत्याग कर 12 वर्षों तक कठोर तपस्या की।
- **ज्ञान प्राप्ति:**
  - ✓ 42 वर्ष की आयु में ऋजुपालिका नदी के तट पर जंभिकाग्राम के समीप कैवल्य (सर्वोच्च ज्ञान) की प्राप्ति हुई।
  - ✓ तपस्या के 13वें वर्ष में केवल्य (मोक्ष) की प्राप्ति हुई।
- मृत्यु: 527 ईसा पूर्व में 72 वर्ष की आयु में पावापुरी (पटना के निकट) में उनका निधन हुआ जिसे मल्ल और लिच्छवि जातियों ने दीपोत्सव के रूप में मनाया।

प्रमुख जैन तीर्थंकर

तीर्थंकर एवं जन्मस्थान	प्रतीक	निर्वाण (मृत्यु स्थान)
1. ऋषभनाथ (आदिनाथ) – अयोध्या (कोशल)	बैल	कैलाश पर्वत
2. अजीतनाथ – अयोध्या	हाथी	सम्मेद शिखर (पारसनाथ पर्वत, झारखंड)
3. सम्भवनाथ – श्रावस्ती	घोड़ा	सम्मेद शिखर
19. मल्लिनाथ – मिथिला (बिहार)	कलश (जलपात्र)	सम्मेद शिखर
22. नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) – सौरीपुर (द्वारका के निकट, गुजरात)	शंख	गिरनार पर्वत (गुजरात)
23. पार्श्वनाथ – वाराणसी	सर्प (सर्पफन)	सम्मेद शिखर
24. महावीर (वर्धमान) – कुंडग्राम (वैशाली, बिहार)	सिंह	पावापुरी (बिहार)

जैन धर्म के सिद्धांत

- मोक्ष त्रि-रत्न के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है:

1. सम्यक दर्शन (सम्यक दर्शन)
2. सम्यक ज्ञान (सम्यक ज्ञान)
3. सम्यक आचरण (सम्यक चरित्र)

जैन धर्म के पाँच सिद्धांत

1. अहिंसा - जीवो के प्रति हिंसा न करना (सूत्रकृतांग सूत्र) ।
2. सत्य - सत्यनिष्ठा (झूठ न बोलना) ।
3. अस्तेय - चोरी न करना।
4. अपरिग्रह- वस्तुओं का संग्रह न करना एवं अनासक्ति।
5. ब्रह्मचर्य - ब्रह्मचर्य/संयम।

- ✓ "नमो अरिहंतानम" - नवकार मंत्र की एक पंक्ति जिसका अर्थ है "मैं सभी अरिहंतों को नमन करता हूँ"। अरिहंत वे आत्माएँ है जिन्होंने पूर्ण ज्ञान, दर्शन, आनंद और शक्ति प्राप्त कर ली है।
- ✓ निर्वाण - जब कोई तीर्थंकर जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र पर विजय प्राप्त करके नश्वर शरीर छोड़ता है तो उसे निर्वाण या मोक्ष कहा जाता है।
- ✓ **बसदी -** जैन मंदिर या मठ, विशेष रूप से कर्नाटक में प्रचलित।

जैन संगीतियाँ:

संगीति	**स्थान और अध्यक्षता**	**प्रमुख योगदान**
प्रथम जैन संगीति	पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना), 300 ईसा पूर्व, अध्यक्षता – स्थूलभद्र	12 अंगों (मूल जैन ग्रंथों) का संकलन
द्वितीय जैन संगीति	वल्लभी (गुजरात), 512 ईस्वी, अध्यक्षता – देवर्धि क्षमाश्रमण	ग्रंथों का अंतिम संकलन, 12 उपांग जोड़े गए, महावीर की शिक्षाओं का संरक्षण

जैन धर्म के संप्रदाय और उप-संप्रदाय

पक्ष	**श्वेतांबर (श्वेत वस्त्रधारी)**	**दिगंबर (नग्न या आकाश वस्त्रधारी)**
उत्पत्ति और नेतृत्वकर्ता	स्थूलभद्र के नेतृत्व में मगध क्षेत्र में ही रहे।	भद्रबाहु के नेतृत्व में दक्षिण भारत (अकाल में) चले गए।
वस्त्र	साधारण श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।	वस्त्र नहीं पहनते; निर्वस्त्रता को मोक्ष के लिए आवश्यक मानते हैं।
पवित्र ग्रंथ	जैन आगमों (अंग और अंग बाह्य) को मान्यता देते हैं।	मूल आगमों की प्रमाणिकता को अस्वीकार करते हैं; आचार्य कुंदकुंद के ग्रंथों का अनुसरण करते हैं।
प्रमुख उपसंप्रदाय	मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी	बीसपंथ, तेरापंथ, तारणपंथ (समैयापंथ)
शाही संरक्षण	गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आचार्य हेमचंद्र के नेतृत्व में संरक्षण दिया।	चंद्रगुप्त मौर्य और गंग वंश, कदंब और राष्ट्रकूट जैसे दक्षिण भारत के शासक।

आजीवक / आजीविक संप्रदाय

- बुद्ध और महावीर (छठी शताब्दी ईसा पूर्व) के समकालीन मक्खलि गोशाल (गोशाल मस्करिपुत्र) द्वारा स्थापित।
- सब कुछ ब्रह्मांडीय व्यवस्था (नियति) द्वारा पूर्व-निर्धारित है।
- परमाणुवाद में विश्वास - ब्रह्मांड प्राकृतिक नियमों के तहत संयुक्त अविभाज्य कणों से बना है।
- संरक्षण: बिन्दुसार (अशोक के पिता) आजीवक अनुयायी थे।
- अशोक ने बराबर पहाड़ियों (बिहार) की गुफाओं को आजीवक भिक्षुओं को समर्पित किया (उदाहरण के लिए, लोमस ऋषि गुफा, सुदामा गुफा, नागार्जुनी गुफा)।

4 CHAPTER मौर्य साम्राज्य

- मौर्य साम्राज्य की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की थी। पुराणों में मौर्यों को 'शूद्र' कहा गया है और कुमराहार स्थित पुरातात्विक स्थल मौर्य राजधानी पाटलिपुत्र के अवशेषों का प्रतिनिधित्व करता है।

महत्वपूर्ण शासक

चंद्रगुप्त मौर्य (324–297 ईसा पूर्व)
↓
बिंदुसार (297–272 ईसा पूर्व)
↓
अशोक (268–232 ईसा पूर्व)
↓
दशरथ / कुनाल (232–226 ईसा पूर्व)
↓
सम्प्रति (226–215 ईसा पूर्व)
↓
शालिशुक (215–202 ईसा पूर्व)
↓
देववर्मा (202–195 ईसा पूर्व)
↓
शतधन्वन (195–191 ईसा पूर्व
↓
बृहद्रथ (191–180 ईसा पूर्व)

चंद्रगुप्त मौर्य (324–297 ईसा पूर्व)

- भारतवर्ष के पहले अखिल भारतीय साम्राज्य के निर्माता चंद्रगुप्त मौर्य मुरा के पुत्र थे (जो एक शिकारी की पुत्री थी और विष्णु पुराण के अनुसार शूद्र वर्ग से संबंध रखती थी)। उन्होंने गुरु चाणक्य (कौटिल्य) के मार्गदर्शन में पाटलिपुत्र में नंद वंश को पराजित किया और उत्तर-पश्चिम भारत में सिकंदर के शासकों (सत्रपों) को हराया। चंद्रगुप्त ने एक यूनानी राजकुमारी से विवाह कर यूनानियों से गठबंधन किया और पारोपमिसाद, अराकोसिया और गेद्रोसिया के प्रदेशों को प्राप्त किया।
- इन्होंने जैन धर्म अपनाया; सिंहासन अपने पुत्र बिंदुसार को सौंपकर श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में संलेखना (आध्यात्मिक उपवास द्वारा मृत्यु) का व्रत लिया।

प्रशासन

- मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में केंद्रीकृत शासन व्यवस्था थी जिसमें शासन को केंद्रीय और प्रांतीय स्तर पर विभाजित किया गया था। प्रमुख अधिकारियों में सचिव/अमात्य, मंत्री, पुरोहित (उच्च पुरोहित), गुप्तचर और विभागाध्यक्ष शामिल थे। नगर प्रशासन का संचालन छह समितियों द्वारा किया जाता था जबकि नागरिक और सैन्य मामलों की देखरेख के लिए 24 विभाग थे। एक विशाल स्थायी सेना थी जिसकी निगरानी छह सैन्य बोर्ड करते थे और चाणक्य प्रधानमंत्री के रूप में कार्यरत थे।

मेगस्थनीज़ की 'इंडिका'

- चंद्रगुप्त मौर्य (जिन्हें यूनानियों ने "सैंड्रोकोट्टस" कहा) ने एक ऐसे समाज पर शासन किया जहाँ दासप्रथा नहीं थी। समाज को सात वर्गों में विभाजित किया गया था जिसमें सातवाँ वर्ग राजकीय सलाहकारों का था। उन्होंने युद्ध में हाथियों का उपयोग किया और पाटलिपुत्र को 64 द्वारों और विशाल दुर्ग प्रणालियों से सुसज्जित कर सुदृढ़ किया था।

बिंदुसार (297–272 ईसा पूर्व)

- बिंदुसार, चंद्रगुप्त मौर्य और रानी दुर्धरा के पुत्र थे। यूनानियों द्वारा उन्हें "अमित्रघात" (शत्रुओं का संहारक) कहा जाता था। उन्होंने 16 राज्यों को जीतकर मौर्य साम्राज्य का विस्तार लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप तक कर दिया (केवल कलिंग और कुछ दक्षिणी क्षेत्र छोड़कर)। वे आजीवक संप्रदाय के संरक्षक थे, साथ ही उन्होंने बौद्ध और जैन धर्मों के प्रति भी सहिष्णुता दिखाई।

अशोक (268–232 ईसा पूर्व)

- अशोक बिंदुसार के पुत्र और उज्जैन के पूर्व-राज्यपाल थे। वे 268 ईसा पूर्व में उत्तराधिकार संघर्ष के बाद सम्राट बने। उन्होंने "देवनामपिय" (देवों का प्रिय), "प्रियदर्शी" (जो देखने में प्रिय लगे) और बाद में "धर्माशोक" की उपाधियाँ ग्रहण की। अशोक को विश्व इतिहास के महानतम शासकों में गिना जाता है।

कलिंग युद्ध और परिवर्तन

- **कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व)**: भूमि और समुद्री मार्गों के लिए रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण; भारी जनहानि और विनाश जिसने अशोक को गहरा आघात पहुँचाया; इसके बाद अशोक ने युद्ध त्यागकर **बौद्ध धर्म** अपनाया और **चक्रवर्ती सम्राट** बन गए। उन्होंने **भेरिघोष** (युद्ध नगाड़ा) के स्थान पर **धम्मघोष** (धर्म का नगाड़ा) को शांति पूर्ण विजय (**धर्म-विजय**) का प्रतीक बना दिया।

शिलालेख (धम्मलेख)

- जनता को प्रत्यक्ष संदेश भेजने वाले अशोक भारत के पहले शासक; इनमें प्राकृत, यूनानी और अरामाईक भाषाओं तथा ब्राह्मी (बाएँ से दाएँ) एवं खरोष्ठी लिपि (दाएँ से बाएँ) का प्रयोग किया गया; उन्होंने कुल **33 शिलालेख** (14 प्रमुख शिला लेख, 7 स्तंभ लेख, 2 कलिंग शिला लेख और कई लघु लेख) जारी किये: ये लेख भारत और बाहर के क्षेत्रों में स्थापित किए गए, जैसे: **धौली, जौगड़, कालसी, मानसेहरा, शाहबाज़गढ़ी, सोपारा, मास्की, टोपरा, बैराट, सुवर्णगिरि**। बाद में इन्हें सर्वप्रथम **1837 ईस्वी में जेम्स प्रिन्सेप** द्वारा पढ़ा गया।

शिला लेखों की विषयवस्तु

शिला लेख संख्या	विषय / विषयवस्तु
पहला	पशु बलि पर प्रतिबंध
दूसरा	सामाजिक कल्याण के उपाय
तीसरा	माता-पिता के प्रति सम्मान
चौथा	धम्म का प्रभाव और पशुओं के प्रति अहिंसा
पाँचवा	धम्म के प्रचार हेतु धम्ममहामात्रों की नियुक्ति
छठा	जनकल्याण की योजनाएँ और कुशल प्रशासन
सातवाँ	शांति, मानसिक संतुलन, श्रद्धा और सहिष्णुता
आठवाँ	अशोक की पहली बोधगया यात्रा और बोधिवृक्ष दर्शन (धम्म यात्रा)
नौवाँ	अर्थहीन समारोहों (जन्म, विवाह आदि) की निंदा की।
दसवाँ	धम्म को लोकप्रिय बनाने की अशोक की इच्छा
ग्यारहवाँ	धम्म की प्रशंसा और धार्मिक सहिष्णुता
बारहवाँ	विभिन्न आस्थाओं का संवर्धन
तेरहवाँ	कलिंग युद्ध का वर्णन, यूनानी शासकों का उल्लेख और युद्ध से धम्म -विजय की ओर परिवर्तन
चौदहवाँ	लोक समझ के लिए धम्म अभिलेखों का सारांश।

प्रसिद्ध शिलालेख

- **कलिंग शिलालेख I**: अधिकारियों की निष्पक्षता और हर पाँच वर्षों में निरीक्षण का प्रावधान।
- **मास्की शिलालेख (कर्नाटक)**: यह पहला शिलालेख है जिसमें *अशोक* का नाम स्पष्ट रूप से अंकित है जिससे अशोक का नाम **'देवनामपिय पियदर्शी'** होने की पुष्टि होती है।
- **शाहबाज़गढ़ी शिलालेख (पाकिस्तान)**: खरोष्ठी लिपि में लिखित; अशोक के धम्म सिद्धांतों का उल्लेख।
- **भाब्रू-बैराट शिलालेख (राजस्थान)**: अशोक की बौद्ध धर्म में व्यक्तिगत आस्था को दर्शाता है।

स्तंभलेख

- **7 प्रमुख स्तंभ** – मेरठ, दिल्ली-टोपरा, प्रयाग (इलाहाबाद), लौरिया-अरेराज, लौरिया-नंदनगढ़, रामपुरवा (2 स्तंभ) ।

- **4 लघु स्तंभ** - सांची, सारनाथ, इलाहाबाद, निगाली सागर।
- **तराई स्तंभ (रुम्मिनदेई / लुंबिनी):** अशोक द्वारा बुद्ध के जन्मस्थल की यात्रा के स्मरण में स्थापित।
- **संकीसा स्तंभ** (उत्तर प्रदेश) - एक विशाल हाथी की प्रतिमा वाला स्तंभ।
- ये सभी शिलालेख और स्तंभ अशोक की *धम्म नीति* के प्रमुख स्रोत हैं।

अशोक का धम्म

- 'धम्म' शब्द संस्कृत से लिया गया है जिसका अर्थ है धार्मिक कर्तव्य; यह अहिंसा, करुणा, सत्य, सहिष्णुता, सामाजिक कल्याण और बड़ों तथा सभी संप्रदायों के प्रति सम्मान पर आधारित है; यह कर्मकांड की बजाय नैतिकता पर बल देता था और इसका उद्देश्य दिग-विजय (युद्ध के माध्यम से विजय) के बजाय धर्म-विजय (धर्म के माध्यम से विजय) था।

धार्मिक नीति एवं मिशनरी प्रयास

- **अशोक** का धम्म किसी धार्मिक अनुष्ठान की बजाय एक **नैतिक और सदाचारयुक्त जीवनशैली** पर आधारित था। उन्होंने **धार्मिक सहिष्णुता (**बराबर की गुफाओं में **आजीवक संप्रदाय** को संरक्षण) को बढ़ावा दिया, शाही शिकार के स्थान पर **धम्म यात्राएँ** आरंभ की, **मोग्गलिपुत्त तिस्स के अधीन तीसरी बौद्ध संगीति** (250 ईसा पूर्व, पाटलिपुत्र) का आयोजन किया; उन्होंने **धम्म प्रचार** के लिए मिशनरियों को विदेशों में भेजा जैसे: **सीरिया**, **मिस्र**, **यूनान**, **श्रीलंका** और **दक्षिण-पूर्व एशिया**। अशोक ने अपने पुत्र **महेंद्रा/महिंदा** और पुत्री **संघमित्रा** को **बोधिवृक्ष की एक शाखा** के साथ श्रीलंका भेजा। उन्होंने बौद्ध स्थापत्य का संरक्षण किया, विशेष रूप से **सांची स्तूप** का निर्माण करवाया जो भारत के सबसे प्राचीन पत्थर के स्मारकों में से एक है।

अशोक के अधीन प्रशासन

- अशोक का प्रशासन कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर आधारित था जिसमें कानून के चार स्रोत (धर्म, व्यवहार, चरित्र, राजशासन) थे; उसके पांच प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे (पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जैन, तोसली, सुवर्णगिरि) और वह एक पितृसत्तात्मक राजा था जिसने नैतिकता को बढ़ावा दिया, राजधानी में पशु वध पर प्रतिबंध लगाया, जन्म और मृत्यु पंजीकरण का आयोजन किया और एक कुशल गुप्तचर व्यवस्था बनाए रखी।
- **मुख्य अधिकारी**:
  - ✓ **राजूक/रज्जुक** - न्यायिक अधिकारी।
  - ✓ **धम्म महामात्र** - धम्म का प्रचार करने वाले।
  - ✓ **पातिवेदक** - राजकीय संदेशवाहक।
  - ✓ **युक्त** - राजस्व एवं जनकल्याण प्रशासन के अधिकारी।
  - ✓ **पुलिसानी** - जनमत एकत्र करने वाले अधिकारी।

अशोकोत्तर काल

- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार अशोक ने 27 वर्षों तक शासन किया। उनकी मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य तीव्रता से कमजोर होने लगा और सीमित या दुर्लभ स्रोतों के कारण यह एक अंधकारमय काल में प्रवेश कर गया। अशोक के पुत्रों में तिवर, कुणाल, जलूक और महेन्द्र शामिल थे। संप्रति ने सीमित समय के लिए सिंहासन संभाला। मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र शुंग द्वारा हत्या कर दी गई, जिससे लगभग 137 वर्ष पुराने मौर्य साम्राज्य का अंत हो गया — जो अशोक की मृत्यु के लगभग 50 वर्षों के भीतर समाप्त हो गया।

Unleash the topper in you